

आदरणीय रत्ना साहेब,
सादर चरण स्पर्श;

आपका एक और पत्र प्राप्त हुआ पिछले दोनों पत्र मुझे मिले थे।
जिनके लिखे मैंने आपको पत्र डाका था। पेरिस के पते पर वह
खुद आपको नहीं मिला। ऐसा मुझे आपके इस पत्र से बात हुआ।
मैंने इसके पूर्व आपको लिखा है। आपके पत्र आपके चित्र मेरे
प्राप्त हैं। ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं उनसे आंदोलित
न हो पाऊँ। मैं चित्र बनाते वक्त भी आपके चित्र को
काल्पनिक रूप से था इसे मैं इस तरह कहूँ कि मेरा चित्र
शुरू करते वक्त मैं आपके किसी न बनाये गये चित्र की
कल्पना करता हूँ और अपनी पूरी कोशिश इस बात की
करता हूँ मैं इस चित्र को इस तरह बनाऊँ कि वह मेरा
लगे। यह एक विचित्र किस्म की जड़ोजहद है। बिथोविन
या मोजार्ट के काम्पोजिशनस उनके बाद कई संगीतकारों
द्वारा किये जाते रहे हैं और वे उनके काम्पोजिशनस होते हुए
भी उनके नहीं हैं। हमारी भारतीय संगीत परम्परा भी
महान है। राग एक ही किन्तु हर कालकार उस राग का विस्तार
अपने तरीके से करता है। यह कितनी बड़ी देन है परम्परा की।
आपके चित्र राग हैं। मैं उन चित्रों में अपना विस्तार खोजने
की कोशिश करता हूँ। यह विस्तार रंगों में भी हो पाये ऐसी
मेरी इच्छा है। रंगों की संवेदनशीलता को जो आपने अपने
चित्रों में रखा है वह इस दुनिया के लिये एक भिसाल है।
रंग आपके चित्रों में अपना स्वरूप पाते हैं वे स्वयं से
आपके चित्रों में मिलते हैं। कितना अद्भुत है यह सोचना कि
एक ही रंग पूरी दुनिया में हजारों चित्रकार इस्तेमाल कर
रहे हैं किन्तु वे रंग-अर्थ एक ही चित्र में पा रहे हैं।

इस तरह से रंगों का इस्तेमाल किसी भी चित्रकार के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। इसी की प्रेरणा में आपके चित्रों से प्राप्त कर अपने चित्रों में लाने का प्रयास करता हूँ। यह प्रयास निश्चित ही अपना पूरा समय लेगा और मैं भी उसे उसका यह समय उसे देने के लिये तैयार हूँ। रंगों के दोन समझने के लिये पूरे आठ साल मैंने सिर्फ काले रंग में काम किया और उसमें मैंने यह चाहा कि काला रंग पूरी उसकी 'काली दुहा' के साथ खड़ा हो और साथ ही उस काले रंग का उगला पक्ष भी मैं पकड़ पाऊँ। आपने इस सुरुवात के मेरे बहुत से काम भी देखे हैं। इन कामों में मैं कहीं तक सफल हो पाया हूँ। यह तो मैं नहीं जानता किन्तु काम मैंने पूरी ईमानदारी से किया है। इसके बाद ही मैं रंगों की तरफ बढ़ा और अभी मेरा यह मानना है कि रंग मुझसे दूर है। उन्हें दोस्त बनाने में शायद मेरी पूरी जिंदगी काम आ जाये।

आपके चित्रों में रंग कई तरह से काम करते हैं। रंग स्पेस है, रंग रूपाकार है, रंग सिर्फ रंग है, रंग विषय है, रंग कथ है, रंग सून्य है, रंग दृश्य है, रंग लहर है, रंग स्वर है, रंग शब्द है, रंग रेखाये है, रंग अनंत है, रंग निरंतर है। यह तो मैं कुछ ही श्रेष्ठता स्पष्ट कर पा रहा हूँ क्योंकि शब्द मेरी विधा नहीं है। अतः उनमें मैं उस अनंत असीम विस्तार में नहीं जा सकता हूँ जो आपके चित्र में है। शब्दों में मेरी अपनी सीमा है। रंग का मही महत्व में समझना चाहता हूँ मैं चाहता हूँ कि रंग मेरे चित्रों में 'प्राणतत्व' की तरह मौजूद हो। वही उसका स्पंदन हो। वही उसका चरित भी हो। वही पहचान भी हो। देखिये क्या होता है? यह प्रश्न वाचक चिन्ह बहुत ही महत्वपूर्ण है? यह किस वक्त सामने आकर जिंदगी खत्म कर दे, यह पता ही नहीं है। यह किस मोड़ पर ~~आकर~~ सामने आकर खड़ा हो जाये यह भी पता नहीं है। अतः किसी भी कर्म के लिये प्रस्तुत होना मात्र लक्ष्य होना चाहिये। उसका फल मिले यह मानव जाति का ऐसा अदृष्ट अंग है जो जिंदगी में कई बार टूटता है किन्तु फिर भी वह लक्ष्य मही खड़ा आ रहा है।

यही ग्राम कई लोगों के जीने का बहाना हो जाता है। इस ग्राम को तोड़ने के लिये या इससे बाहर निकलने के लिये 'साधना', 'तपस्या' की आवश्यकता है। यह अभ्यास से ही प्राप्त हो सकते हैं। मेरा अभ्यास प्रारंभ है। मैंने पुनः अपने को एकत्रित कर अपने ध्यान को एकाग्र किया है और एक बड़ा चित्र बनाना शुरू किया है। आशा है आपको दिरवा पाऊँगा।

आपके भेजे हुये ध्यानाचित्र मिले। आपके पत्र से विश्वास मिला, बल मिला, अकेले होने का अहसास दूर हुआ। आपकी साधुवादिता अलभ्य है। मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि आपका विश्वास मेरे साथ है। मुझे अनंत प्रेरणा प्राप्त है।

अभी मैंने 'Diary of a Genius' सल्मा जोर साली की पढ़ना शुरू की है। विचित्र संसार।

मैं दरिदों की Truth of Painting पढ़ना चाहता हूँ। अभी हाल ही में मुझे पता लगा है कि इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है। अगर आप मुझे उपलब्ध करा दें तो मैं अनुग्रहित होऊँगा। आप अपने साथ लेते आये तो बेहतर होगा। यहाँ मैंने कई गगन पूछा किन्तु उपलब्ध नहीं है। दरिदों-इतने बड़े विचारक चित्रकारों के विषय में क्या कहते हैं। यह जानने की मेरी जिज्ञासा है।

आपका

—J.M.I.— ३.XII.४९.

(अखिलेश)

रात्रि १२.३०, ओपाल से.